ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-1* Issue-7* August- 2016
Innovation The Research Concept

हिंदी काव्य और रसः समीक्षा

सुमन वर्मा
व्याख्याता,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, धौलपुर
राजस्थान, भारत

Abstract

काव्य का तात्पर्य ऐसी वाक्य रचना से है जिसके अंतर्गत कुछ ऐसे विशिष्ट शब्दों का चयन किया गया है जो पाठकों की कल्पना और मनोवेगों को प्रभावित करने में समर्थ है। काव्य छंदात्मक, अलंकारयुक्त एवं रस से ओतप्रोत एक ऐसी अभिव्यक्ति है जो कविहृदय से निकलकर पाठक के हृदय को प्रभावित करने और पाठक को न केवल उसमें डूबने वल्कि उसका आनंद लेने योग्य बनाती है। वैश्विक स्तर पर प्रत्येक देश में समय-समय पर काव्य रचना हुई है और प्रत्येक देश का काव्य समकालीन सामाजिक-दशाओं को समझने में सहायक है और साथ ही अपने आप में महत्वपूर्ण है, परंतु हिंदी काव्य जिसका प्रारम्भ तेरहवीं शताब्दी से माना जाता है, अन्य साहित्यों में उपलब्ध काव्य से अधिक महत्वपूर्ण है। यह सहज, सरल और स्वाभाविक अभिव्यक्तिपूर्ण है। हिंदी काव्य की रचना हिंदी साहित्य में उल्लेखित विभिन्न कालों अर्थात युगों के अंतर्गत हुई है। हिंदी काव्य के महत्व और उसकी सार्थकता इस तथ्य में निहित है कि भारतीय साहित्य के समस्त प्राचीन ग्रंथों का लेखन काव्य में ही हुआ है। भक्तिकाल, रीतिकाल, छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग, नयी कविता युग, साठेत्तरी कविता आदि हिंदी काव्य के प्रमुख काल और युग हैं जिनमें सृजित काव्य तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य को समझने में सहायक है। प्रत्येक काल में रचित काव्य स्वयं में उल्लेखनीय है और तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक स्थानीय और राष्ट्रीय दशाओं का बोध करवाने में सहायक है। रस मनोभावों का सुखद संचार है जिसका प्रयोग प्रमुख रूप से काव्य के अंतर्गत किया जाता है। रस काव्य की आत्मा है और बिना रस के सफल काव्य की कल्पना असम्भव है।

प्रस्तुत शोधपत्र 'हिंदी काव्य और रस' हिंदी काव्य के अंतर्गत विभिन्न रसों के प्रयोग और महत्व पर प्रकाश डालता है। शोध निष्कर्ष इस तथ्य की पुष्टि करता है कि कवि अपने मनोभावों को प्रकट करने हेतु अपनी कविताओं में रसों का प्रयोग कर अपनी कविताओं को रोचक बनाते हैं।

मुख्य शब्दः काव्य, रचना, कल्पना, मनोवेग, छंद, अलंकार, रस, साहित्य, काल, युग ।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य की विकास यात्रा जो तेरहवीं शताब्दी में प्रारम्भ हुई थी, इक्कीसवीं शताब्दी तक आ पहुंची है। हिंदी साहित्य की लम्बी विकास यात्रा के दौरान गद्य एवं पद्य की विविध विधात्मक धाराऐं प्रवाहित हुईं जिन्होंने प्रत्येक काल की विषेशताओं को प्रकट कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया, और साथ ही, प्रत्येक काल के साहित्य अध्ययन ने सरलतापूर्वक युगीन दृष्टि भी प्रदान की। हिंदी काव्य में प्राचीन भक्तिकाल की कविताओं में कृष्ण भक्ति धारा की महत्ता अपना अलग स्थान रखती है। विद्यापति ने चैदहवीं, पन्द्रहवीं शताब्दी में राधाकृष्ण प्रेम की बेहद सरल, सरस, कोमल संकल्पना कर न केवल बिहार, बंगाल अपितु सम्पूर्ण हिंदी क्षेत्र में असाधारण लोकप्रियता प्राप्त की। विद्यापति की कविताओं की व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक विवेचना इस विषय का प्रथम सोपान है।

हिंदी काव्य इतिहास में रीतिकाल एक और महत्वपूर्ण पड़ाव है। इस साहित्य के रचनाकाल की सम्पूर्ण अवधि में देश में भी कई उतार-चढ़ाव आये। तत्कालीन विशेष के सामाजिकों की अभिरूचि, उसकी छाप भी इस काल के साहित्य पर स्पष्ट दिखती है। इसी परिप्रेक्ष्य में रीतिमुक्त काव्यधारा के विकास में घनानंद प्रमुख कवि हैं। आधुनिक कविता में 'छायावाद' काल वस्तुतः देश के लिए अपनी पहचान, अपनी अस्मिता की खोज का युग रहा है। सामाजिक, राजनैतिक इतिहास की पृष्ठभूमि पर इस काल के काव्य एवं कवियों का अध्ययन मूलतः भारतीय जीवन के विकास के अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ाव के प्रति समझ पैदा करने में सहायक सिद्ध होता है। इसी परिप्रेक्ष्य में महाप्राण, क्रांतिकारी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुमित्रा नंदन पंत आदि कवियों की विविध भाव बोध से सम्पृक्त कविताओं का अध्ययन अत्यावश्यक है। मध्यवर्गीय समाज के सत्य से जुड़कर छायावादोन्तर काल में, साधन के रूप में कविता के क्षेत्र में किये गये प्रयोगों के लिए 'अज्ञेय' की कविताओं का अध्ययन भी आवश्यक है।

रस वह है पाठक जिसकी अनुभूति किसी सुखद काव्य को सुनते समय या पढ़ते समय अंतरात्मा से एक ख़ुशी महसूस करते हैं, या किसी दुखद काव्य को सुनते समय जो पीड़ा या दर्द का अनुभव करते हैं । अन्य शब्दों में, काव्य को पढ़ते समय या सुनते समय जो आनंद की अनुभूति होती है, उसे रस कहते हैं। रस को सर्वप्रथम आचार्य भरत मुनि ने अपने विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' में परिभाषित किया। आचार्य भरत मुनि के अनुसार, "विभावानुभावव्याभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पत्ति" अर्थात् विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

रस के अंग-

रस के निम्नलिखित चार अंग हैं-

1. स्थायीभाव

स्थायी भाव वे भाव हैं,जो हमारे हृदय में हमेशा उपस्थित रहते हैं, लेकिन स्थिर अवस्था में। इनकी मानक संख्या 9 मानी गई है-

1.रति

2. हास

3.शोक

4.क्रोध

5.उत्साह

6.भय

7.जुगुप्सा

8विस्मय

9.शम

यहाँ यह तथ्य उल्लेखनीय है कि भरत मुनि ने स्थाईभावों के मानकों की संख्या 8 मानी है।

2. विभाव

स्थायी भाव की उत्पत्ति का कारण बनने वाले व्यक्ति, वास्तु और बाहरी विकार विभाव कहलाते हैं। विभाव दो प्रकार के होते हैं- आलंबन और उद्दीपन

आलंबन-

स्थाई भाव को जगाने वाले कारण जो कोई व्यक्ति हो सकता है , कोई वस्तु हो सकती है या कोई परिस्थिति हो सकती है उसे आलम्बन विभाव कहा जाता है। उदाहरण के लिए जब सुदामा श्री कृष्ण से मिलने आते हैं तो उनकी दीन दशा को देख कर रो पड़ते हैं। सुदामा की दीन -हीन दशा उनके स्थाई भाव शोक को जागती है, इसलिए सुदामा आलम्बन विभाव है।

उद्दीपन-

उद्दीपन शब्द का अर्थ है और बढ़ाना , और तेज़ करना। जैसे आग में घी डाल कर उसे और तेज़ या उद्दीप्त कर दिया जाता है उसी तरह स्थाई भाव को और तेज़ करने वाले कारण उद्दीपन विभाव कहे जाते हैं। जैसे -लक्ष्मण का परशुराम को ललकारना व्यंग्य करना मुस्कुराना उनके क्रोध को और बढ़ा देता है। यही उद्दीपन विभाव है।

3. संचारीभाव

वे भाव जो थोड़े समय के लिए संचालित होते हैं, संचारिभाव कहलाते हैं। संचारिभावों की संख्या 33 होती है। हिन्दी कवि देव ने छल नामक एक चौंतीसवां संचारी भाव भी माना है।

4. अनुभाव

स्थायीभाव जाग्रत होने के पश्चात उत्पन्न होने वाले मानवीय क्रियाकलाप अनुभाव कहलाते हैं। विद्वान अनुभावों की संख्या को लेकर एक मत नहीं हैं। कुछ विद्वान् दो अनुभाव मानते हैं, जबकि कुछ अन्य विद्वान चार अनुभाव मानते हैं। निम्न लिखित उदाहरण अनुभावों को समझने में सहायक है-

'पुष्पवाटिका में जब जानकी जी, श्री राम जी को देखती हैं।तो उनके मन के मन में रति नामक स्थायी भाव जाग्रत होता है। जिसके आलंबन है राम जी और पुष्पवाटिका का मनोरम मौसम उद्दीपन विभाव है। जानकी जी के मन में उत्पन्न लज्जा,रोमांच का भाव संचारी भाव है।और उनके चेहरे की भाव-भंगिमा जैसे पलकें झुका लेना आदि अनुभाव है।'

रसों की संख्या-

भरत मुनि ने रसों की संख्या 8 मानी है।

1. श्रृंगार रस

जब किसी काव्य में नायक नायिका के प्रेम, मिलने, बिछुड़ने आदि जैसी क्रियाओं का वर्णन होता है तो वहाँ श्रृंगार रस होता है। यह दो प्रकार का होता है-

1. **संयोग श्रृंगार-** जब नायक नायिका के मिलने और प्रेम क्रियायों का वर्णन होता है तो संयोग श्रृंगार होता है। उदाहरण-

भरै भौन में करत है, नैनन ही सों बात

2. **वियोग श्रृंगार-** जब नायक नायिका के बिछुड़ने का वर्णन होता है तो वियोग शृंगार होता है। उदाहरण-

मधुबन तुम कत रहत हरे, विरह वियोग श्याम

3. हास्य रस-

काव्य में हँसी अर्थात हास्य तत्व हास्य रस है। उदाहरण-

चींटी चढ़ी पहाड़ पे मरने के वास्ते

4. करूण रस-

साहित्यिक काव्य अथवा गद्य पठन उपरान्त मन में उत्पन्न करुणा और दया का भाव करुण रस का द्योतक है। उदाहरण-

दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नही कही।

5. **रौद्र रस-**

काव्य में प्रकट कवि का क्रोध भाव रौद्र रस होता है। उदाहरण-

उस काल मरे क्रोध के तन काँपने उसका लगा
मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा

6. **वीर रस-**

काव्य में प्रस्तुत किसी की वीरता का वर्णन अथवा कवि द्वारा किया गया वीरता का आह्वान वीर रस होता है। उदाहरण-

वीर तुम बढे चलो, धीर तुम बढे चलो

7. भयानक रस-

काव्य पठानोपरांत मन में उत्पन्न भय या काव्य में भयभीत होने का वर्णन भयानक रस होता है। उदाहरण-

लंका की सेना कपि के गर्जन रव से काँप गई,
हनुमान के भीषण दर्शन से विनाश ही भांप गई।

8. **वीभत्स रस-**

काव्य पठनोपरांत मन में मन में उत्पन्न घृणा वीभत्स रस होता है। उदाहरण-

कोउ अंतडिनी की पहिरि माल इतरात दिखावट।
कोउ चर्वी लै चोप सहित निज अंगनि लावत।

8. अद्भुत रस

जब किसी गद्य कृति या काव्य में किसी ऐसी बात का वर्णन हो जिसे पढ़कर या सुनकर आश्चर्य हो तो अद्भुत रस होता है। उदाहरण-

कनक भूधराकार सरीरा
समर भयंकर अतिबल बीरा।

भरत मुनि द्वारा बताये गए 8 रसों के अलावा तीन अन्य रसों को भी हिंदी काव्य साहित्यकारों द्वारा स्वीकार किया जाता है जो निम्न प्रकार हैं-

9. **शान्त रस** (आचार्य उद्भट)-

काव्य पठानोपरांत मन में उत्पन्न असीम शान्ति और वैराग्य भाव शांत रस होता है। उदाहरण-

मेरो मन अनत सुख पावे
जैसे उडी जहाज को पंछी फिर जहाज पे आवै।

10. **वात्सल्य रस** (आचार्य विश्वनाथ)-

काव्य में किसी की बाल लीलाओं या किसी के बचपन का वर्णन वात्सल्य रस होता है। सूरदास के पदों में श्री कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन वात्सल्य रस है। उदाहरण-

मैया मोरी दाऊ ने बहुत खिजायो।
मोसों कहत मोल की लीन्हो तू जसुमति कब जायो।

11. भक्ति रस (रूप गोस्वामी)-

इस रस में ईश्वर कि अनुरक्ति और अनुराग का वर्णन होता है अर्थात इस रस में ईश्वर के प्रति प्रेम का वर्णन किया जाता है। उदाहरण-

अँसुवन जल सिंची-सिंची प्रेम-बेलि बोई
मीरा की लगन लागी, होनी हो सो होई।

अध्ययन का उद्देश्य

1. हिंदी काव्य साहित्य का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करना।
2. हिंदी काव्य साहित्य में रसों के इतिहास पर संक्षिप्त टिप्पणी करना।
3. विभिन्न स्थायी भावों को स्पष्ट करना।
4. रसों के प्रमुख प्रकारों पर प्रकाश डालना।
5. रसों को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करना।

प्राक्कल्पना

1. हिंदी काव्य साहित्य सात शताब्दियों से भी अधिक पुराना साहित्य है।
2. रस हिंदी काव्य की आत्मा है जिसके अभाव में हिंदी काव्य निराधार है।
3. प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव होता है।
4. रस के विभिन्न प्रकार हैं जिनका संबंध विभिन्न मनोभावों से होता है।

साहित्य पुनरावलोकन

'केशवदास की 'रामचन्द्रिका' से रौद्र रस का उदाहरण पहले ही अंकित किया जा चुका है। भूषण की रचनाओं में भी रौद्र रस के उदाहरण मिल जाते हैं। वर्तमान काल में श्यामनारायण पाण्डेय तथा 'दिनकर' की रचनाओं में रौद्र रस की प्रभावकारी व्यंजना हुई है। संस्कृत के ग्रन्थों में 'महाभारत' तथा 'वीरचरित', 'वेणीसंहार' इत्यादि नाटकों में रौद्र रस की प्रभूत अभिव्यक्ति हुई है'।[1]

'भरत ने नाट्यशास्त्र में मूलतः नौ रसों को ही मान्यता दी। भक्ति को भाव माना जाय या रस इस पर काव्यशास्त्रियों ने किंचित् विवेचन किया। मम्मट ने सर्वप्रथम "काव्य-प्रकाश" में भगवद्-विषयक रति को स्वतंत्र भाव की संज्ञा दी। आगे चलकर पंडितराज जगन्नाथ ने "रस गंगाधर" में इस मान्यता पर प्रश्नचिह्न लगाया। हालाँकि परवर्ती साहित्य परंपरा में वात्सल्य रस और भक्ति रस को नौ-रसों के विस्तार के रूप में स्वीकृत कर लिया गया।[2] भक्ति रस का स्थायी भाव 'भक्ति' या 'भगवद्-विषयक रति' को माना गया है'।[3]

'सहृदयों के लिए रस आधार-भूत तत्व है। जीवन दर्पण साहित्य में रस की स्थिति आवश्यकता बन गई। उपनिषद, पुराण में भी रस की प्रासंगिकता को किसी न किसी रूप में स्वीकार कर लिया गया। शब्दार्थ के माध्यम से भाव की कलात्मक अभिव्यक्ति काव्य है और उसका आनंदमय आस्वाद रस है अर्थात शब्दार्थ के माध्यम से अभिव्यक्त भाव के आनन्दमय आस्वादन का नाम रस है। डा. नगेन्द्र मानते है कि वात्स्यायन के समय तक रस शब्द की शास्त्रीय विवेचना आरम्भ हो चुकी थी। इस प्रकार भरत मुनि रचित नाट्यशास्त्र के पूर्व भी रस का एक स्वरूप स्थिर हो चुका था|रस सिद्धान्त का जैसा मनोवैज्ञानिक और विस्तृत विवेचन डा. नगेन्द्र ने किया है, वैसा विश्लेषण शायद ही कोई कर पाया हो, इन्होंने रस सिद्धान्त से जुड़ा कोई पक्ष या सिद्धान्त अछूता नहीं छोड़ा है। गहन चिन्तन-मनन के उपरान्त ही अपने निष्कर्ष तय किये हैं'।[4]

शोधपद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु चयनित शोधपद्धति के अंतर्गत निम्न लिखित सम्मिलित हैं-

1. आचार्य भरत मुनि के विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' के अंतर्गत उल्लेखित रसों एवं स्थायीभावों का अध्ययन
2. प्रसिद्ध हिंदी कवियों की कविताऐं
3. वाचनालयों में पठन हेतु उपलब्ध शोध प्रबंध
4. इंटरनेट साइट्स पर उपलब्ध रिसर्च जर्नल्स
5. राष्ट्रिय और अंतर्राष्ट्रीय रिसर्च जर्नल्स में प्रकाशित प्रमुख लेख और शोधपत्र।

निष्कर्ष

ऐसी अलंकार युक्त एवं छंदात्मक वाक्य रचना जो पाठकों की कल्पना और मनोवेगों को प्रभावित करने में समर्थ है, काव्य कहलाती है। कविता कविहृदय में उत्पन्न होती है और पाठक के हृदय को इस प्रकार प्रभावित करती है कि वह अपने जीवन की कटु सच्चाइयों को कुछ समय के लिए भूलकर कल्पना जगत में विचरण कर उसके आनंद में डूब जाता है। हिंदी काव्य का प्रारम्भ तेरहवीं शताब्दी से माना जाता है।

हिंदी साहित्य विश्व-साहित्य में उच्च-पदस्थ है एवं अन्य भाषाओँ में लिखित साहित्यों से अधिक लोकप्रिय और महत्वपूर्ण है। यह सहज, सरल और स्वाभाविक अभिव्यक्तिपूर्ण है। हिंदी साहित्य के विभिन्न कालों में सृजित काव्य स्वयं में महत्वपूर्ण है और तत्कालीन कवियों की कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को स्पष्ट करने में सहायक है। हिंदी काव्य के महत्व और उसकी सार्थकता इस तथ्य में निहित है कि भारतीय साहित्य के समस्त प्राचीन ग्रंथों का लेखन काव्य में ही हुआ है।

हिंदी काव्य को विभिन्न कालों और युगों, यथा, भक्तिकाल, रीतिकाल, छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग, नयी कविता युग, साठेत्तरी कविता आदि के सन्दर्भ में समझा जा सकता है। हिंदी काव्य की अन्य उल्लेखनीय विशेषताओं के अलावा उसका रस-तत्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है जो इसको विशिष्ट पहचान प्रदान करता है। रस मनोभावों का सुखद संचार है जिसका प्रयोग प्रमुख रूप से काव्य के अंतर्गत किया जाता है। रस काव्य की आत्मा है और बिना रस के सफल काव्य की कल्पना असम्भव है।

रस काव्य पाठकों को कविता के भावानुरूप सुखद अथवा दुखद अनुभूति प्रदान करते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से आचार्य भरत मुनि प्रथम विद्वान हैं जिन्होंने 'नाट्यशास्त्र' के अंतर्गत रस पर विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत किये और जो

अनेकों शताब्दियों के बीत जाने के बाद भी स्वीकार्य हैं। आचार्य भरत मुनि के अनुसार, विभाव, अनुभाव और व्याभिचारी भाव(संचारी भाव) के मेल से रस की निष्पत्ति होती है। रस के चार अंग हैं- स्थायीभाव, विभाव, संचारीभाव और अनुभाव। भरत मुनि के अनुसार, रसों की संख्या 8 है- श्रृंगार रस, हास्य रस, करूण रस, रौद्र रस, वीर रस, भयानक रस, वीभत्स रस एवं अद्भुत रस।

भरत मुनि द्वारा बताये गए 8 रसों के अलावा तीन अन्य रसों को भी स्वीकार किया जाता- शान्त रस (आचार्य उद्भट), वात्सल्य रस (आचार्य विश्वनाथ) एवं भक्ति रस (रूप गोस्वामी)। हिंदी काव्य में प्रत्येक रस के अनेकों उदाहरण हैं जो हिंदी काव्य पाठकों के विभिन्न मनोभावों को प्रभावित करने में समर्थ हैं। निष्कर्षतः, हिंदी काव्य में रसों का विशेष महत्व है जो हिंदी काव्य को उसकी आत्मा प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. नाट्यशास्त्र 6।61, भरतमुनि
2. 6:38 नाट्य शास्त्र भरतमुनि
3. 6:39-41नाट्य शास्त्र भरतमुनि
4. रसतरंगिणी, 6
5. सरस्वती कण्ठाभरण, 5:45
6. साहित्यदर्पण 1:179

अंत टिपण्णी

1. धीरेंद्र वर्मा,हिन्दी साहित्यकोश, भाग-1, मई 2007 (हिन्दी), वाराणसीः ज्ञानमण्डल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-581।
2. विनयमोहन, शर्मा (1958). धीरेन्द्र वर्मा (संपा०). हिन्दी साहित्य कोश भाग - 1 (2015 संस्करण). वाराणसीः ज्ञानमण्डल लिमिटेड. पृ० 443.
3. रमाशंकर, तिवारी (1958). धीरेन्द्र वर्मा (संपा०). हिन्दी साहित्य कोश भाग - 1 (2015 संस्करण). वाराणसीः ज्ञानमण्डल लिमिटेड. पृ० 444.
4. स्नेहलता भारद्वाज, 'भारतीय रसवादी चिन्तन परम्परा में डा. नगेन्द्र का योगदान', साहित्य की अनवरत बहती लहर, अंक 6: जून 24, वर्ष 2014